प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928

PD 370T OP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2006

रु 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा नारायण प्रिंटर्स एंड बाइंडर्स, डी-6, सैक्टर-63, नोएडा 201 301 से मुद्रित।

ISBN 81-7450-645-4

सर्वाधिकार सुरक्षित

- ☐ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- ☐ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- ☐ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	:	पी.राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	शिव कुमार
मुख्य संपादक	:	श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार अधिकारी	:	गौतम गांगुली
संपादन सहायक	:	ओम प्रकाश
उत्पादन सहायक	:	सुबोध श्रीवास्तव

आवरण
करन चड्डा

चित्रांकन
कल्लोल मजूमदार

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विपयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः वालकेन्द्रित- शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निध ारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक- समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध- कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य

विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याहियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटिताया: राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां वहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिपदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तु विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नवदेहली
20 नवम्बर 2006

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफेसर एवं* अध्यक्ष, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अर्कनाथ चौधरी, *प्रोफेसर*, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर कैम्पस, जयपुर।

कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफेसर संस्कृत*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रवाचक संस्कृत*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

दु:शासन ओझा, *प्राचार्य*, केन्द्रीय विद्यालय, पुरी, उड़ीसा।

देवकी सेनगुप्ता, *टी.जी.टी.* संस्कृत, दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसन्त कुंज, नयी दिल्ली।

नारायण दाश, *संस्कृत शिक्षक*, सर्वकारीय उच्च विद्यालय, गुम्मा, गजपति, उड़ीसा।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* संस्कृत, रा. व. मा. वा. विद्यालय, नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रोफेसर* संस्कृत, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

वासुदेव शास्त्री, सेवानिवृत्त, *संस्कृत प्रभारी*, एस.आई.ई.आर.टी. उदयपुर।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तरांचल।

सदस्य समन्वयक

रणजित वेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् डॉ. रामास्वामी आयंगर, *अवकाश प्राप्त निदेशक*, चिन्मय इन्टरनेशनल फाउन्डेशन, बैंगलूर एवं डॉ. विभा रानी दूबे, *रीडर संस्कृत*, महिला महाविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी की आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासम्भव योगदान दिया है।

परिषद् डॉ. विश्वास एवं डॉ. सम्पदानन्द मिश्र के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक निर्माण में सहयोग के लिए परशराम कौशिक, *प्रभारी*, कम्प्यूटर स्टेशन, भापा विभाग; सर्वेन्द्र कुमार एवं सतीश झा, *कॉपी एडीटर*; राज मङ्गल यादव, प्रूफ रीडर एवं कमलेश आर्या, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, इतिहास, कला, विज्ञान आदि विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। विविधताओं से युक्त इस विशाल भूभाग में भावनात्मक एकता का अक्षुण्ण स्रोत इस भाषा के माध्यम से ही प्रवाहित होता रहा है। संस्कृत के व्याकरण एवं वाक्य संरचना का प्रभाव भी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर परिलक्षित होता है। इस भाषा में परस्पर सहयोग, सामञ्जस्य, त्याग, सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति एवं विश्ववन्धुत्व के भावों की अजस्र धारा प्रवाहित है। मानवीय गुणों को विकसित करने की इसमें अपूर्व क्षमता है; अतः राष्ट्रीय अखण्डता तथा विश्ववन्धुत्व की भावना को सुदृढ़ करने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है।

सम्प्रेषणात्मक उपागम के आधार पर संस्कृत के शिक्षण को विद्यालय स्तर पर सुगम, रुचिकर एवं सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्वीकृत पाठ्यक्रम के क्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत भाषा-विभाग द्वारा उच्चप्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकसित होने वाली नवीन पुस्तक शृङ्खला **रुचिरा** का विकास किया गया है। इनमें नैतिक एवं शिक्षाप्रद मूल्यों से परिपूर्ण पद्यों का समावेश करने के साथ-साथ रुचिवर्धक और ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है।

रुचिरा पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार रुचिवर्धक सामग्री से विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में संस्कृत भाषा के प्रयोग में कुशलता तो प्रदान करेगी ही, साथ ही संस्कृत साहित्य के प्रति उनमें अपेक्षित अभिरुचि भी उत्पन्न करने में समर्थ हो सकेगी, ऐसा विश्वास है।

इसी शृङ्खला का द्वितीय पुष्प **रुचिरा द्वितीयो भागः** छात्र-छात्राओं के लिए प्रस्तुत है। इस पुस्तक के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों की अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर माध्यम से संस्कृत में ही हो जिससे विद्यार्थी संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की कुशलता विकसित कर सकें।

संस्कृत भाषा की छन्दःसम्पदा की लय एवं गेयता का आनन्द छात्रों को प्राप्त हो, एतदर्थ कुछ नवीन गीत भी इस पुस्तक में दिये गए हैं। पाठ्य-सामग्री को रोचक बनाने

के लिए कुछ पाठों की रचना संवाद अथवा नाट्य-शैली में की गई है। वर्णनात्मक-पाठों एवं कथा पाठों *'पण्डिता रमाबाई'*, *'विश्वबन्धुत्वम्'* *'अमृतं संस्कृतम्'* और *'अनारिकायाः जिज्ञासा'* में *'दुर्बुद्धिः विनश्यति'*, *'स्वावलम्बनम्'*, *'सङ्कल्पः सिद्धिदायकः'* *'समवायो हि दुर्जयः'* आदि में प्रेरणास्पद विषयवस्तु को प्रस्तुत किया गया है। संवादात्मक पाठों में छात्रों को आनन्द की अनुभूति हो सके, इसके लिए *'हास्यबालकविसम्मेलनम्'* जैसे पाठों को भी स्थान दिया गया है। राष्ट्रध्वज के महत्त्व को बताने के लिए संवादात्मक शैली में *'त्रिवर्णः ध्वजः'* पाठ को इस पुस्तक में समाहित किया गया है। पद्य-पाठों के अन्तर्गत *'सुभाषितानि'*, *'सदाचारः'*, *'विमानयानं रचयाम'*, *'कल्पलतेव विद्या'* तथा नवीन विधा लोरी के रूप में *'लालनगीतम्'* आदि पाठों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी बातें बताई गई हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में कुल 15 पाठ हैं। कठिन शब्दों का अर्थ-बोध कराने के लिए छात्रों की सुविधा हेतु प्रत्येक पाठ के अन्त में दिये गए शब्दार्थ पुस्तक की विशेषता है। पाठान्त में विविध प्रश्नों वाली अभ्यास-चारिका दी गई है, जिससे भाषा-संरचनात्मक-ज्ञान की वृद्धि में विद्यार्थियों को सहायता मिल सके। इसके अतिरिक्त *'ध्यातव्यम्'* के माध्यम से विद्यार्थी तत्सम्बन्धी अन्य पुस्तकों से विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास कर सकेंगे तथा आकर्षक चित्रों के आधार पर स्वकल्पना से सरल वाक्यों का निर्माण भी कर सकेंगे। पुस्तक के अन्त में *'परिशिष्टम्'* के अन्तर्गत कारक और विभक्तियों का परिचय दिया गया है जिससे विद्यार्थी इनके अन्तर को समझ सकें। साथ ही पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दों एवं धातुओं में से कुछ प्रमुख शब्दों तथा धातुओं के रूप भी दिये गए हैं, जिनके आधार पर विद्यार्थी अन्य शब्दों एवं धातुओं के रूपों का निर्माण कर सकें।

संक्षेप में **रुचिरा द्वितीयो भागः** में निम्नलिखित विन्दुओं पर वल दिया गया है-

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- प्रदत्त निर्देशों के आधार पर प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न-निर्माण का कौशल
- भाषिक तत्त्वों (श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन) का कौशल
- जीवनमूल्यों से युक्त संस्कृत-पद्यों का परिचय
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप कर सकने की क्षमता
- संस्कृत की वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- रोचक कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम का संयोजन कर सकने का सामर्थ्य
- अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित ज्ञानवर्धक अभ्यास
- प्रत्येक पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ

शिक्षक की भूमिका

कोई भी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक कितनी ही वैज्ञानिक और सुरुचिपूर्ण क्यों न हो, अध्यापन-कार्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ अध्यापन की सफलता के लिए तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है, वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए यथावसर दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं, उनका विद्यार्थियों से अभिनय भी कराया जा सकता है।

यद्यपि इस संकलन को विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, तथापि इसको और अधिक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सतत स्वागत करेंगे।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

पाठानुक्रमणिका

	पुरोवाक्	v
	भूमिका	ix
	मङ्गलम्	1
	सुभाषितानि	3
प्रथमः पाठः	दुर्बुद्धिः विनश्यति	7
द्वितीयः पाठः	स्वावलम्बनम्	13
तृतीयः पाठः	हास्यबालकविसम्मेलनम् (*अव्ययप्रयोगः*)	19
चतुर्थः पाठः	पण्डिता रमाबाई	26
पञ्चमः पाठः	सदाचारः	31
षष्ठः पाठः	सङ्कल्पः सिद्धिदायकः (*धातुप्रयोगः*)	36
सप्तमः पाठः	त्रिवर्णः ध्वजः	44
अष्टमः पाठः	विमानयानं रचयाम	49
नवमः पाठः	विश्वबन्धुत्वम् (*कारकविभक्तिः उपपदविभक्तिश्च*)	53
दशमः पाठः	समवायो हि दुर्जयः	59
एकादशः पाठः	कल्पलतेव विद्या	64
द्वादशः पाठः	अमृतं संस्कृतम् (*इकारान्तस्त्रीलिङ्गः*)	69
त्रयोदशः पाठः	अनारिकायाः जिज्ञासा (*ऋकारान्तपुँल्लिङ्गः*)	75
चतुर्दशः पाठः	लालनगीतम्	80
पञ्चदशः पाठः	वर्णविचारः, कारकम्, शब्दरूपाणि धातुरूपाणि च	85
परिशिष्टम्		

मङ्गलम्

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ 1 ॥

-ऋग्वेदः (5.82.5)

परस्परविरोधिन्योरेकसंश्रयदुर्लभम् ।
सङ्गतं श्रीसरस्वत्योर्भूतयेऽस्तु सदा सताम् ॥ 2 ॥

-विक्रमोर्वशीयम् (5.24)

भावार्थः

हे सूर्य देव! हमारे समस्त पापों को दूर करें तथा जो हमारे लिए मङ्गलकारक है उसे हमें प्रदान करें ॥ 1 ॥

एक दूसरे के विरोध में रहने वाली लक्ष्मी और सरस्वती का एक आश्रय में दुर्लभ समागम सदा सज्जनों के कल्याण के लिए हो ॥ 2 ॥

प्रथमः पाठः

सुभाषितानि

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ 1 ॥

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥ 2 ॥

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये ।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥ 3 ॥

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम् ।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥ 4 ॥

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥ 5 ॥

क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते ।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः ॥ 6 ॥

शब्दार्थाः

पृथिव्याम्	–	धरती पर
सुभाषितम्	–	सुन्दर वचन
मूढैः	–	मूर्खों के द्वारा
पाषाणखण्डेषु	–	पत्थर के टुकड़ों में
रत्नसंज्ञा	–	रत्न का नाम
विधीयते	–	किया जाता है
धार्यते	–	धारण किया जाता है
तपते	–	जलता है
वाति	–	बहता है / बहती है
वायुश्च (वायुः + च)	–	पवन भी
प्रतिष्ठितम्	–	स्थित है
तपसि	–	तपस्या में
शौर्ये	–	बल में
नये	–	नीति में
विस्मयः	–	आश्चर्य
बहुरत्ना	–	अनेक रत्नों वाली
वसुन्धरा	–	पृथिवी
सद्भिरेव (सद्भिः + एव)	–	सज्जनों के साथ ही
सहासीत (सह + आसीत)	–	साथ बैठना चाहिए
कुर्वीत	–	करना चाहिए
सद्भिर्विवादम् (सद्भिः + विवादम्)	–	सज्जनों के साथ झगड़ा

सुभाषितानि

नासद्भिः (न+ असद्भिः)	–	असज्जन लोगों के साथ नहीं
धनधान्यप्रयोगेषु	–	धनधान्य के प्रयोग में/व्यवहार में
संग्रहेषु	–	संग्रहों में, संचय (इकट्ठा) करने में
त्यक्तलज्जः	–	संकोच या भीरूता को छोड़नेवाला
क्षमावशीकृतिर्लोके (क्षमावशीकृतिः + लोके)	–	संसार में क्षमा (सबसे बड़ा) वशीकरण है
शान्तिखड्गः	–	शान्ति की तलवार

अभ्यासः

1. सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।
2. यथायोग्यं श्लोकांशान् मेलयत-

क	ख
धनधान्यप्रयोगेषु	नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्। 4
विस्मयो न हि कर्त्तव्यः	त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्। 5
सत्येन धार्यते पृथ्वी	बहुरत्ना वसुन्धरा। 2
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च	विद्यायाः संग्रहेषु च। 1
आहारे व्यवहारे च	सत्येन तपते रविः। 3

3. एकपदेन उत्तरत-
   (क) पृथिव्यां कति रत्नानि? त्रीणि
   (ख) मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते? पाषाणखण्डेषु
   (ग) पृथिवी केन धार्यते? सत्येन
   (घ) कैः सङ्गतिं कुर्वीत?
   (ङ) लोके वशीकृतिः का?

4. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) सत्येन वाति वायुः।

(ख) सद्भिः एव सहासीत।

(ग) वसुन्धरा बहुरत्ना भवति।

(घ) विद्यायाः संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

(ङ) सद्भिः मैत्रीं कुर्वीत।

5. प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) कुत्र विस्मयः न कर्त्तव्यः?

(ख) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि कानि?

(ग) त्यक्तलज्जः कुत्र सुखी भवेत्?

6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा लिङ्गानुसारं लिखत-

रत्नानि वसुन्धरा सत्येन सुखी अन्नम् वह्निः रविः पृथ्वी सङ्गतिम्

पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
....	....	....
....	....	....
....	....	....

7. अधोलिखितपदेषु धातवः के सन्ति?

पदम्	धातुः
करोति कर्त्तव्यः	....
पश्य	....
भवेत्	....
तिष्ठति स्थितः	....

द्वितीयः पाठः

दुर्बुद्धिः विनश्यति

अस्ति मगधदेशे फुल्लोत्पलनाम सरः। तत्र संकटविकटनामकौ हंसौ निवसतः। कम्बुग्रीवनाम्नः तयोः मित्रम् एकः कूर्मः अपि तत्रैव प्रतिवसति स्म।

अथ एकदा धीवराः तत्र आगच्छन् अकथयन् च-वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः। एतत् श्रुत्वा कूर्मः अवदत्-"मित्रे! किं युवाभ्यां धीवराणां वार्ता श्रुता? अधुना किम् अहं करोमि?" हंसौ अवदताम्- "प्रातः यद् उचितं तत्कर्त्तव्यम्।" कूर्मः अवदत्- "मैवम्। तद् यथाऽहम् अन्यं ह्रदं गच्छामि तथा कुरुतम्।"

हंसौ अवदताम्-"आवां किं करवाव?" कूर्मः अवदत्-"अहं भवद्भ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि।"

हंसौ अवदताम्-"अत्र कः उपायः?" कच्छपः वदति-"युवां काष्ठदण्डम् एकं चञ्च्वा धारयताम्। अहं काष्ठदण्डमध्ये अवलम्ब्य युवाभ्यां पक्षबलेन सुखेन गमिष्यामि।" हंसौ अकथयताम्- "सम्भवति एषः उपायः। किन्तु अत्र एकः अपायोऽपि वर्तते। आवाभ्यां नीयमानं त्वामवलोक्य जनाः किञ्चिद् वदिष्यन्ति एव। यदि त्वमुत्तरं दास्यसि तदा तव मरणं निश्चितम्। अतः त्वम् अत्रैव वस।" तत् श्रुत्वा क्रुद्धः

कूर्मः अवदत्-"किमहं मूर्खः? उत्तरं न दास्यामि। किञ्चिदपि न वदिष्यामि।" अ...
अहं यथा उक्तवान् तथा युवां कुरुतम्।

एवं कृते काष्ठदण्डे लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा गोपालकाः पश्चाद् अधावन् अवदन् च- "हंहो! महदाश्चर्यम्। हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।" कश्चिद् वदति- "यद्ययं कूर्मः कथमपि निपतति तदा अत्रैव पक्त्वा खादिष्यामि।" अपरः अवदत्- "सरस्तीरे दग्ध्वा खादिष्यामि"। अन्यः अकथयत्- "गृहं नीत्वा भक्षयिष्यामि" इति।

तेषां तद् वचनं श्रुत्वा कूर्मः मित्रयोः दत्तं वचनं विस्मृत्य कोपेन अवदत्- "यूः... भस्म खादत" इति वदन्नेव कूर्मः आकाशात् पतितः गोपालकैः मारितश्च...
अतएवोक्तम्-

सुहृदां हितकामानां वाक्यं यो नाभिनन्दति।
स कूर्म इव दुर्बुद्धिः काष्ठाद् भ्रष्टो विनश्यति॥

शब्दार्थाः

24-04-09
H.W

सरः	-	तालाब
कूर्मः/कच्छपः	-	कछुआ
प्रतिवसति स्म	-	रहता था
धीवराः	-	मछुआरे

मत्स्यकूर्मादीन्	-	मछली, कछुआ आदि को
मारयिष्यन्ति	-	मारेंगे
नैवम् (न + एवम्)	-	ऐसा नहीं
ह्रदम्	-	तालाब को
धारयतम्	-	धारण करें
पक्षबलेन	-	पंखों के बल से
अपायः	-	हानि
नीयमानम्	-	ले जाते हुए
अवलोक्य	-	देखकर
लम्बमानम्	-	लटकते हुए (को)
उड्डीयते	-	उड़ रहा है
विस्मृत्य	-	भूल कर
भस्म	-	राख
सुहृदाम्	-	मित्रों का/के/की
हितकामानाम्	-	कल्याण की इच्छा रखने वाले का/के/की
अभिनन्दति	-	प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता/करती है
दुर्बुद्धिः	-	दुष्ट बुद्धि वाला

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत-

फुल्लोत्पलम्	अवलम्ब्य	पक्त्वा
कम्बुग्रीवः	आवाभ्याम्	भक्षयिष्यामि
उक्तवान्	ह्रदम्	सुहृदाम्
भवद्भ्याम्	उड्डीयते	भ्रष्टः

2. एकपदेन उत्तरत-

(क) कूर्मस्य किं नाम आसीत्? कम्बुग्रीवः

(ख) सरस्तीरे के आगच्छन्? धीवराः

(ग) कूर्मः केन मार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति? आकाशमार्गेण

(घ) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा के अधावन्? गोपालकाः

3. अधोलिखितवाक्यानि कः कं प्रति कथयति इति लिखत-

कः कथयति कं प्रति कथयति

	हंसौ	कूर्मं प्रति
यथा- प्रातः यद् उचितं तत्कर्त्तव्यम्।		
(क) अहं भवद्भ्यां सह आकाशमार्गेण गन्तुम् इच्छामि।	.....	.....
(ख) अत्र कः उपायः?	.....	.....
(ग) अहम् उत्तरं न दास्यामि।	.....	.....
(घ) यूयं भस्म खादत।	.....	.....

4. मञ्जूषातः क्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत-

अभिनन्दति भक्षयिष्यामः इच्छामि वदिष्यामि उड्डीयते प्रतिवसति स्म

(क) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि .....।

(ख) अहं किञ्चिदपि न .....।

(ग) यः हितकामनां सुहृदां वाक्यं न .....।

(घ) एकः कूर्मः अपि तत्रैव .....।

(ङ) अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् .....।

(च) वयं गृहं नीत्वा कूर्म .....।

पूरणवाचकशब्दाः

	पुँलिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुँसकलिङ्गे
१	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
२	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
३	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
४	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
५	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
६	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
७	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
८	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
९	नवमः	नवमी	नवमम्
१०	दशमः	दशमी	दशमम्